[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 7783 **L**

Unique Paper Code : 2133200014

Name of the Paper : Architectural System in Sanskrit, DSE

Name of the Course : **B.A. (Prog.) with Sanskrit, UGCF 2022**

Semester : VIII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Unless otherwise required in a question answers should be written either in Sanskrit or in Hindi or in English, but the same medium should be used throughout the paper.
3. Attempt **all** questions.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. अन्यथा आवश्यक न होने पर, इस प्रश्नपत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए, लेकिन सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।
3. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'समरांगणसूत्रधार' के आधार पर भगवान् विश्वकर्मा के 'मानसपुत्रों' के नाम बताते हुए उनके मध्य हुए दार्शनिक संवाद के मुख्य प्रतिपाद्य विषयों को लिखिए। 15

   Naming the 'Manasputras' of Lord Vishwakarma according to Samrangana Sutradhara, write the main subject matters of the philosophical dialogue between them.

   अथवा/OR

   सृष्टि निर्माण से पूर्व ब्रह्मा के मन में निहित 'मौलिक सत्य' और 'महदादिसर्ग' में वर्णित पंचमहाभूतों की उत्पत्ति प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

   Explain the 'Fundamental Truth' inherent in Brahma's mind before creation and the process of origin of the Panchamahabhutas as described in 'Mahadadisarga'.

2. 'वास्तु रत्नाकर' के अनुसार 'भूपरिग्रह प्रकरण' के अंतर्गत गृहस्थ आश्रम की प्रशंसा क्यों की गई है? वास्तु सम्मत जीवन में इसके महत्व को समझाइए। 15

   Why is 'Grihasthashrama' praised under the 'Bhuparigraha Prakarana' according to Vastu Ratnakara? Explain its importance in a Vastu-compliant life.

   अथवा/OR

   बृहत्संहिता के 'वास्तुविद्याध्याय' के आधार पर 'वास्तुपुरुष' (Embodiment of Cosmic Man) के पद-विन्यास और उसके स्वरूप का विस्तृत वर्णन कीजिए।

   Give a detailed description of the 'Pada-vinyasa' of 'Vastu Purusha' (Cosmic Man) and detailed description of its nature based on the 'Vastuvidyadhyaya' of Brihatsamhita.

3. 'बृहत्संहिता' की निर्माण शैली के आधार पर 'त्रिशाल वास्तु' की संरचना, उसके लक्षण तथा विभिन्न दिशाओं में उनके फलों का विवेचन कीजिए। 15

P.T.O.

Based on the compositional style of the 'Brihat Samhita', analyze the structure, characteristics, and directional effects of 'Trishala Vastu'.

अथवा/OR

बृहद्वास्तुमाला के भूमि-प्लवन (Slope) के आधार पर 'पुण्यक वास्तु', 'रोगकारक वास्तु' और 'अर्गल वास्तु' के लक्षणों एवं प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।

Clarify the characteristics and effects of 'Punyaka Vastu', 'Rogakara Vastu', and 'Argala Vastu' based on the 'Bhumi-plavana' (Slope) of Brihatvastumala.

4. 'बृहद्वास्तुमाला' के आधार पर भूमि परीक्षण की विधि बताते हुए 'कूर्मपृष्ठ' और 'नागपृष्ठ' भूमि के मध्य अंतर एवं उनके फलादेशों को लिखिए। 15

Describing the method of land examination according to Brihatvastumala, write the difference between 'Kurmaprishtha' and 'Nagaprishtha' land and their outcomes.

अथवा /OR

प्राचीन संस्कृत वास्तु ग्रंथों में वर्णित 'भूमि-संशोधन' (Land Rectification) की प्रक्रिया और शल्य-निवारण के वैज्ञानिक महत्व पर प्रकाश डालिए।

Highlight the process of 'Bhumisanshodhana' (Land Rectification) described in ancient Sanskrit Vastu texts and the scientific importance of Shalya-removal.

5. वीथियों के वर्गीकरण में 'धनवीथी' और 'वैश्वानरी वीथी' के विशिष्ट लक्षणों का उल्लेख करते हुए गृहस्वामी पर उनके पड़ने वाले प्रभावों को समझाइए। 15

Explain the effects on the home owner by mentioning the specific characteristics of 'Dhanvithi' and 'Vaishvanari Vithi' in the classification of Vithis.

अथवा/OR

बृहत्संहिता के अनुसार गृह आरम्भ (Bhumipooja) के समय किए जाने वाले 'प्रथम विधान' और 'स्तम्भ-स्थापना' के शास्त्रीय नियमों का वर्णन कीजिए।

Describe the classical rules of 'Prathama Vidhana' performed during Bhumipooja and 'Stambha-sthapana' (Pillar installation) according to Brihatsamhita.

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर विस्तृत टिप्पणियाँ लिखिए: 2x7.5=15

Write detailed notes on any **two** of the following:

(i) शिल्पन्यास विधि और उसका महत्व (Shilpnyasa Vidhi and its importance.)

(ii) दिक्-ज्ञान एवं दिशा निर्धारण की विधि (Orientation and method of direction determination.)

(iii) मांगलिक वृक्षारोपण एवं निषिद्ध लेखाकर्म (Auspicious tree plantation and Nishiddha Lekhakarma.)

(iv) गृहविभाग एवं द्वार-सज्जा के नियम (Rules of Grihavibhaga and Door Decoration.)